Q1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पड़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर के लिए उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।

कहा जाता है कि हमारा लोकतंत्र यदि कहीं कमज़ोर है तो उसकी एक बड़ी वजह हमारे राजनीतिक दल हैं। वे प्रायः अव्यवस्थित हैं, अमर्यादित हैं और अधिकांशतः निष्ठा और कर्मठता से सम्पन्न नहीं हैं। हमारी राजनीति का स्तर प्रत्येक दृष्टि से गिरता जा रहा है। लगता है उसमें सुयोग्य और सच्चरित्र लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। लोकतंत्र के मूल में लोकनिष्ठा होनी चाहिए, लोकमंगल की भावना और लोकानुभूति होनी चाहिए और लोकसंपर्क होना चाहिए। हमारे लोकतंत्र में इन आधारभूत तत्वों की कमी होने लगी है, इसलिय लोकतंत्र कमज़ोर दिखाई पड़ता है। हम प्रायः सोचते हैं कि हमारा देश-प्रेम कहाँ चला गया, देश के लिए कुछ करने, मर-मिटने की भावना कहाँ चली गई? त्याग और बलिदान के आदर्श कैसे, कहाँ लुप्त हो गए? आज हमारे लोकतंत्र को स्वार्थान्धता का घुन लग गया है। क्या राजनीतिज्ञ, क्या अफसर, अधिकांश यही सोचते हैं कि वे किस तरह से स्थिति का लाभ उठाएँ, किस तरह एक-दूसरे का इस्तेमाल करें। आम आदमी अपने आपको लाचार पाता है और ऐसी स्थिति में उसकी लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाने लगती हैं।

लोकतंत्र की सफलता के लिए हमें समर्थ और सक्षम नेतृत्व चाहिए, एक नई दृष्टि, एक नई प्रेरणा, एक नई संवेदना, एक नया आत्मविशवास, एक नया संकल्प और समर्पण आवशयक है। लोकतंत्र की सफलता के लिए हम सब अपने आप से पूछें कि हम देश के लिए, लोकतंत्र के लिए क्या कर सकते हैं? और हम सिर्फ पूछकर ही न रह जाएँ, बल्कि संगठित होकर समझदारी, विवेक और संतुलन से लोकतंत्र को सफल और सार्थक बनाने में लग जाएँ।

(i) राजनीतिक दल लोकतंत्र की असफलता के कारण बताए जाते हैं, क्योंकि वे प्रायः -
(क) धन और पद-लोलुप हैं।
(ख) निष्ठाहीन और कर्त्तव्यविमुख हैं।
(ग) सम्प्रदायवादी और जातीयतावादी हैं।
(घ) केवल सत्ता-लालसी हैं।

(ii) लोकतंत्र का मूल तत्व नहीं है -
(क) लोक-मंगल के प्रति उपेक्षा।
(ख) लोक-निष्ठा की अपेक्षा।
(ग) लोक-संपर्क की इच्छा।
(घ) लोक के सुख-दुख की अनुभूति।

(iii) आम आदमी की लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाती हैं-
(क) लोकतंत्र की गिरती मर्यादाओं के समक्ष विवशता देखकर।
(ख) नेताओं और अफसरों का उपयोग होते देखकर।
(ग) भाई-भतीजावाद और पक्षपात देखकर।

(घ) केवल धनार्जन को ही जीवन का लक्ष्य पाकर।

(iv) लोकतंत्र की सफलता और सार्थकता आधारित नहीं है -
(क) नई दृष्टि, प्रेरणा और संवेदना पर।
(ख) विवेक और संतुलन की प्रवृत्ति पर।
(ग) संकल्प और समर्पण की वृत्ति पर।
(घ) संगठन और आत्मविशवास के अभाव पर।

(v) 'हम देश के लिए, लोकतंत्र के लिए, क्या कर सकते हैं?' यह वाक्य है -
(क) कर्तृवाच्य में
(ख) कर्मवाच्य में
(ग) भाववाच्य में
(घ) अकर्तृवाच्य में

Solution:

(i) (ख) निष्ठाहीन और कर्तव्यविमुख हैं।
(ii) (क) लोक-मंगल के प्रति उपेक्षा।
(iii) (ख) नेताओं और अफसरों का उपयोग होते देखकर।
(iv) (घ) संगठन और आत्मविश्वास के अभाव पर।
(v) (क) कर्तृवाच्य

- **Q2**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों के लिए उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।
तिलक ने हमें स्वराज का सपना दिया और गांधी ने उस सपने को दलितों और स्त्रियों से जोड़कर एक ठोस सामाजिक अवधारणा के रूप में देश के सामने ला रखा। स्वतंत्रता के उपरान्त बड़े-बड़े कारखाने खोले गए, वैज्ञानिक विकास भी हुआ, बड़ी-बड़ी योजनाएँ भी बनीं, किन्तु गांधीवादी मूल्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता सीमित होती चली गई। दुर्भाग्य से गांधी के बाद गांधीवाद को कोई ऐसा व्याख्याकार न मिला जो राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में गांधी के सोच की समसामयिक व्याख्या करता। सो यह विचार लोगों में घर करता चला गया कि गांधीवादी विकास का माॅडल धीमे चलने वाला और तकनीकी प्रगति से विमुख है। उस पर ध्यान देने से हम आधुनिक वैज्ञानिक युग की दौड़ में पिछड़ जाएँगे। कहना न होगा कि कुछ लोगों की पाखण्डी जीवन शैली ने भी इस धारणा को और पुष्ट किया।
इसका परिणाम यह हुआ कि देश में बुनियादी तकनीकी और औद्योगिक प्रगति तो आई पर देश के सामाजिक और वैचारिक-ढाँचे में जरूरी बदलाव नहीं लाए गए। सो तकनीकी विकास ने समाज में व्याप्त व्यापक फटेहाली, धार्मिक कूपमंडूकता और जातिवाद को नहीं मिटाया।

(i) गांधी ने स्वराज के सपने को सामाजिक अवधारणा का रूप कैसे दिया?

(क) ब्रिटिश शासकों की नीतियों के विरोध द्वारा।

(ख) देश के महिला वर्ग और दलितों से जोड़कर।

(ग) विदेशी शासन के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन द्वारा।

(घ) अपने सत्याग्रहों से समाज में चेतना जगाकर।

(ii) गांधीवादी मूल्य स्वतंत्रता के उपरान्त आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु क्यों नहीं बन सके?

(क) बड़े-बड़े उद्योगों के प्रति आकर्षण के कारण।

(ख) समयानुरूप वैज्ञानिक क्षमता के विकास के कारण।

(ग) गांधीवाद की समयानुकूल व्याख्या न होने के कारण।

(घ) पंचवर्षीय योजनाओं के कार्यान्वयन के कारण।

(iii) गांधीवाद की व्याख्या के अभाव में उसके विषय में धारणा बनी कि वह-

(क) वैज्ञानिक विकास का विरोधी है।

(ख) बड़े उद्योगों की स्थापना का समर्थक नहीं है।

(ग) शिथिल है और तकनीकी विकास में बाधक है।

(घ) पंचवर्षीय योजनाओं का पक्षधर नहीं है।

(iv) देश के सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में बदलाव न आने का कारण था-

(क) देश का औद्योगिक विकास।

(ख) पंचवर्षीय योजनाओं के प्रति झुकाव।

(ग) गांधीवादी मूल्यों के प्रति लगाव का अभाव।

(घ) देशवासियों की वैचारिक संकीर्णता।

(v) "देश में बुनियादी तकनीकी और औद्योगिक प्रगति तो आई पर देश के सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में जरुरी बदलाव नहीं लाए गए" वाक्य का प्रकार है-

(क) संयुक्त

(ख) मिश्र

(ग) साधारण

(घ) सरल

Solution:

(i) (ख) देश के महिला वर्ग और दलितों से जोड़कर।

(ii) (ग) गांधीवाद की समयानुकूल व्याख्या ना होने के कारण।

(iii) (ग) शिथिल है और तकनीकी विकास में बाधक है।

(iv) (घ) देशवासियों की वैचारिक संकीर्णता।

(v) (क) संयुक्त।

- **Q3**

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।

हम जंग न होने देंगे!
विश्व शांति के हम साधक हैं,
जंग न होने देंगे!
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,
ऐटम से फिर नागासाकी नहीं जलेगी
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे!

हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,
मुँह में शान्ति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफ़न बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,
कामयाब हों उनकी चालें, ढंग न होने देंगे!

हमें चाहिए शान्ति, ज़िन्दगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शान्ति, सृजन की है तैयारी,
हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी,
हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे!

(i) किस स्वप्न को कवि नहीं टूटने देना चाहता?

(क) संसार की सम्पन्नता का स्वप्न।
(ख) विश्वशांति का स्वप्ऩ।
(ग) युद्धरहित संसार का स्वप्न।
(घ) पारस्परिक श्रेष्ठता का स्वप्न।

(ii) 'खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी' का तात्पर्य है-

(क) युद्ध के कारण फसल नष्ट नहीं होगी।
(ख) युद्ध अपार जन संहार का कारण नहीं बनेगा।
(ग) खेतों में मृत व्यक्तियों के शव नहीं दिखाई देंगे।
(घ) खेती करने वाला मौत का शिकार नहीं बनेगा।

(iii) कवि ने 'कफ़न बेचने वाले' उन देशों को कहा है जो-

(क) युद्ध के रुप में शक्ति-प्रदर्शन करते हैं।

(ख) घातक अस्त्र-शस्त्रों के सौदागर हैं।

(ग) शक्ति के आधार पर नरसंहार करते हैं।

(घ) अशान्ति और अव्यवस्था में विश्वास रखते हैं।

(iv) कवि ऐसे युद्ध को सार्थक समझता है जो-

(क) राक्षसी शक्तियों का संहारक हो।

(ख) भूख और रोग का विनाशक हो।

(ग) अशान्ति के समर्थकों का सहयोगी हो।

(घ) विश्व के कल्याण का साधक हो।

(v) 'कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी' में अलंकार है-

(क) यमक

(ख) श्लेष

(ग) उपमा

(घ) अनुप्रास

Solution:

(i) (ग) युद्ध रहित संसार का स्वप्न।

(ii) (ख) युद्ध अपार जन संहार का कारण नहीं बनेगा।

(iii) (ख) घातक अस्त्र-शस्त्रों के सौदागर हैं।

(iv) (ख) भूख और रोग का विनाशक हो।

(v) (ख) अनुप्रास।

- **Q4**

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्पों का चयन कीजिए।

जिसके निमित्त तप-त्याग किए, हँसते-हँसते बलिदान दिए,
कारागारों में कष्ट सहे, दुर्दमन नीति ने देह दहे,
घर-बार और परिवार मिटे, नर-नारि पिटे, बाज़ार लुटे
आई, पाई वह 'स्वतंत्रता', पर सुख से नेह न नाता है-
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।

सुख, सुविधा, समता पाएँगे, सब सत्य-स्नेह सरसाएँगे,
तब भ्रष्टाचार नहीं होगा, अनुचित व्यवहार नहीं होगा,
जन-नायक यही बताते थे, दे-दे दलील समझाते थे,

वे हुई व्यर्थ बीती बातें, जिनका अब पता न पाता है।
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।

शुचि, स्नेह, अहिंसा, सत्य, कर्म, बतलाए 'बापू' ने सुधर्म,
जो बिना धर्म की राजनीति, उसको कहते थे वह अनीति,
अब गांधीवाद बिसार दिया, सद्भाव, त्याग, तप मार दिया,
व्यवसाय बन गया देश-प्रेम, खुल गया स्वार्थ का खाता है-
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।

(i) 'क्या यही स्वराज्य कहाता है' – कथन है :

(क) एक प्रश्न
(ख) एक व्यंग्य
(ग) एक समस्या
(घ) एक समाधान

(ii) 'दुर्दमन नीति ने देह दहे' का अभिप्राय है-
(क) स्वतंत्रता-प्रेमियों को दमन में शामिल किया गया।
(ख) उत्पीड़न से देशप्रेमियों का जीवन समाप्त किया गया।
(ग) स्वराज्य के संघर्षशील को उकसाया गया।
(घ) परतंत्रता के विरोधियों का दहन किया गया।

(iii) स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद की स्थिति पर कौन सा कथन अनुपयुक्त है?
(क) समाज में सर्वत्र धन का महत्व बढ़ना
(ख) सुख-सुविधा और स्नेह की प्राप्ति होना।
(ग) उचित व्यवहार का सर्वत्र साम्राज्य होना।
(घ) सब जगह सत्य का बोलबाला होना।

Solution:

(i) (ख) एक व्यंग्य ।
(ii) (ख) उत्पीड़न से देशप्रेमियों का जीवन समाप्त किया गया।
(iii) (क) समाज में सर्वत्र धन का महत्व बढ़ाना।
(iv) (ख)धर्महीन राजनीति के।
(v) (ख) अनुप्रास

- **Q5**

निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-
(क) तुम मन से कर्तव्य का पालन करो।
(ख) मेहनत से जीवन को सफल बनाओ।

(ग) मन की दुर्बलता को त्याग दो।
(घ) रमेश दूसरे कमरे में रहता है।

Solution:

(क) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन।

(ख) भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, करण कारक।

(ग) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

(घ) निश्चित संख्यावाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग।

- **Q6**

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-
(क) चिन्तनशील व्यक्ति ही इस पद पर पहुँच पाता है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ख) प्रेमचन्द सवेरे उठते ही घर को सँवारने के कार्य में जुट जाता है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ग) तुम्हारे आदेश के कारण ही मैं वहाँ गया था। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
(घ) उसने एक ऐसा कार्य किया है जो अत्यन्त प्रशंसा के योग्य है। (वाक्य-भेद बताइए)

Solution:

(क) जो चिंताशील व्यक्ति होता है, वही इस पद पर पहुँच पाता है।

(ख) जैसे ही प्रेमचंद सवेरे उठता है, वैसे ही घर को सँवारने के कार्य में जुट जाता है।

(ग) तुम्हारा आदेश आया और मैं वहाँ गया।

(घ) मिश्र वाक्य

- **Q7**

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-
(क) अब आश्रम में पढ़ने के लिए चलें। (भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए)
(ख) हम इस प्रकार का मसालेदार खाना नहीं खाते हैं। (कर्मवाच्य बनाइए)
(ग) कवि के द्वारा यह मादक सुन्दरता अनेक रूपों में देखी गई है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
(घ) आइये! स्नान किया जाय। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

Solution:

(क) अब आश्रम में पढ़ने के लिए चला जाए।
(ख) हमारे द्वारा इस प्रकार का मसालेदार खाना नहीं खाया जाता है।
(ग) कवि ने यह मादक सुंदरता अनेक रूपों में देखी है।

(घ) आइये! स्नान करें।

- **Q8**

निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का नामोल्लेख कीजिए-

(क) सेवकु सो जो करै सेवकाई।

(ख) जै जग-मंदिर-दीपक सुन्दर।

(ग) अति उत्तम ज्यों चन्द्र।

(घ) देखूँ उसे मैं नित बार-बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना।

Solution:

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) रूपक अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार

- **Q9**

निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः

(क) हाय, यह क्या हो गया! (रेखांकित का पद परिचय लिखिए)

(ख) वह अन्यायी की भाँति व्यवहार कर रहा था। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) फादर रिश्ता बनाकर तोड़ते नहीं हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(घ) प्रीति नदी में पाँउ न बोरयौ (अलंकार का नाम लिखिए)

Solution:

(क) अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग।

(ख) वह ऐसे व्यवहार कर रहा था मानो अन्यायी हो।

(ग) फादर के द्वारा रिश्ता बनाकर तोड़ा नहीं जाता।

(घ) रूपक अलंकार

- **Q10**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।
पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख

बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और उनकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ।

(i) लेखिका द्वारा अपने पिता के व्यक्तित्व के विषय में लिखने का उद्देश्य है-
(क) उनका गौरव-गान।
(ख) उनके गुण-दोषों की चर्चा।
(ग) अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव।
(घ) उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों का बखान।

(ii) लेखिका की हीन-भावना का कारण था-
(क) पिताजी का अनजाना-अनचाहा व्यवहार।
(ख) पिताजी का क्रोधी तथा शक्की स्वभाव।
(ग) लेखिका का रूप-रंग तथा बहिन से तुलना।
(घ) गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन।

(iii) लेखिका के मन में उपजी हीन-भावना का क्या परिणाम हुआ?
(क) साहित्यिक चिन्तन बाधित हुआ।
(ख) स्वास्थ्य और गतिविधियाँ प्रभावित हुईं।
(ग) उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा।
(घ) पिता के प्रति व्यवहार सराहनीय न रहा।

(iv) लेखकीय उपलब्धियों के प्रशंसा के क्षणों में भी लेखिका के अतिशय संकोच का कारण है-
(क) उपलब्धियों की कमी।
(ख) रचनाओं की सदोषता।
(ग) हीन-भावना का प्रभाव।
(घ) विनम्र और संकोची स्वभाव।

(v) 'उपलब्धि' का समानार्थक शब्द है-
(क) उपेक्षा
(ख) अपेक्षा
(ग) समाप्ति
(घ) प्राप्ति

अथवा

पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिसमें अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।
जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहाँ स्त्रियाँ न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दण्डनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है। समाज कीी उन्नति में बाधा डालना है।

(i) लेखक 'अनर्थ' का मूल नहीं मानता है-
(क) पढ़ने-लिखने की उपेक्षा को।
(ख) स्त्री-पुरुष होने को।
(ग) स्त्रियों की पढ़ाई को।
(घ) दुराचार और पापाचार को।

(ii) वे लोग इतिहास की जानकारी नहीं रखते जो कहते हैं कि-
(क) स्त्री शिक्षा समाज की उन्नति में बाधा है।
(ख) पुराने जमाने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं।
(ग) स्त्रियों को जान-बूझकर अनपढ़ रखा जाता था।
(घ) स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अधिकार है।

(iii) 'अनर्थ' का तात्पर्य है-
(क) दोषपूर्ण कार्य।
(ख) निन्दनीय कार्य।
(ग) धनरहित कार्य।
(घ) अनुचित कार्य।

(iv) सामाजिक दृष्टि से ऐसे लोग दण्ड के पात्र हैं जो-
(क) स्त्रियों को पढ़ाने की बात करते हैं।
(ख) जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं।
(ग) सामाजिक नियमों की अनदेखी करते हैं।
(घ) समाज की उन्नति में बाधा डालते हैं।

(v) 'अभिज्ञ' शब्द का विलोम है-
(क) अज्ञ
(ख) अनभिज्ञ

(ग) सुभिज्ञ
(घ) प्राज्ञ

Solution:

(i) (ग) अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव।
(ii) (ग) लेखिका का रूप-रंग तथा बहिन से तुलना।
(iii) (घ) उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा।
(iv) (ग) हीन-भावना का प्रभाव।
(v) (घ) प्राप्ति
अथवा
(i) (ग) स्त्रियों की पढ़ाई को।
(ii) (ख) पुराने जमाने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं।
(iii) (ख) निन्दनीय कार्य
(iv) (ख) जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं।
(v) (ख) अनभिज्ञ

- **Q11**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः
(क) उस घटना का उल्लेख कीजिए जिसके बारे में 'एक कहानी यह भी' की लेखिका को न अपने कानों पर विश्वास हो पाया और न आँखों पर।
(ख) कैसे कहा जा सकता है कि विस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे?
(ग) 'संस्कृति' पाठ का लेखक कल्याण की भावना को ही संस्कृति और सभ्यता का महत्वपूर्ण तत्व मानता है' - स्पष्ट कीजिए।
(घ) स्त्री शिक्षा विरोधियों के किन्हीं दो कुतर्कों का उल्लेख कीजिए।
(ङ) स्त्री शिक्षा के समर्थन या विरोध में अपनी ओर से दो तर्क दीजिए जिनका उल्लेख पाठ में न हुआ हो।

Solution:

(क) एक बार लेखिका के प्रिंसिपल ने उनके पिताजी को पत्र लिखकर विद्यालय में बुलाया। उस पत्र में लिखा गया था कि हमें बताएँ कि हम आपकी पुत्री के विरूद्ध कार्यवाही क्यों न करें। पत्र पढ़कर पिताजी क्रोध में उबल पड़े। उन्होंने लेखिका को क्या कुछ नहीं कहा। पिताजी जब प्रिंसिपल से मिलकर आए, तो लेखिका उनके व्यवहार से हैरान थी। वह कॉलेज में लेखिका का दबदबा जानकर प्रसन्न थे। उन्हें इस बात पर प्रसन्नता और गर्व था कि उनकी बेटी के इशारे मात्र से ही कॉलेज बंद हो जाता है। लेखिका अपने पिता के इस बर्ताव से हैरान थी। उसे अपनी आँखों देखी और कानों सुनी विश्वास नहीं हो रहा था।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक थे। इसके लिए उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है। 90 वर्ष की उम्र में भी उन्होंने शहनाई बजाना नहीं छोड़ा। उन्होंने जीवनभर संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने अंदर जिंदा रखा। उनमें संगीत को सीखने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई। खुदा के सामने वे गिड़गिड़ाकर कहते - "मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।" खाँ साहब ने कभी भी धन-दौलत को पाने की इच्छा नहीं की बल्कि उन्होंने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वे कहते थे - "मालिक से यही दुआ है - फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।" इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।

(ग) लेखक के अनुसार संस्कृति और सभ्यता का निर्माण ही इसलिए किया गया कि वे मानव कल्याण में सहायक हो। ये दोनों मिलकर मनुष्य को सभ्य बनाती है तथा जीवन मूल्यों से अवगत कराती है। उनका उद्देश्य लोक कल्याण की भावना है। अभी तक जो भी आविष्कार हुए है, वह लोक कल्याण के लिए हुए हैं। आग का आविष्कार मानव जाति को प्रगति की कितनी ही सीढ़ियाँ ले चढ़ा है। आज अनगिनत आविष्कार हुए हैं, जिनके कारण मानव जाति फल-फूल रही है। इसी कल्याण की भावना के कारण यह संभव हो पाया है। अन्यथा हम स्वयं की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यदि लड़ते-मरते रहते तो हम कब के समाप्त हो चूके होते।

(घ) स्त्री शिक्षा विरोधियों के अनुसार दो कुतर्क विद्यमान थे। जिनके कारण वे स्त्री शिक्षा के विरोधी थे। वे इस प्रकार हैं।
(1) उनके अनुसार यदि स्त्री पढ़-लिख जाएगी, तो गृह कलह को बढ़ावा मिलेगा। इससे घर में अंशाति हो जाएगी। लड़ाई-झगड़े बढ़ेंगे और उसके पढ़ने से बड़े-बड़े अनर्थ होगें।
(2) इसके अतिरिक्त वे कहते हैं कि प्राचीन समय में स्त्रियाँ पढ़ती नहीं थी क्योंकि प्राचीन संस्कृत-कवियों के नाटकों के अनुसार कुलीन स्त्रियों को अनपढ़ वाली भाषा में बातें करते दिखाया गया है।

(ङ) स्त्री वह पहली कड़ी होती है जिससे बच्चा पहले मिलता है। वह माँ के द्वारा संसार को जानने समझने लगता है, माँ उसको जैसा संसार दिखाती है, वह संसार को वैसा ही देखने लगता है। यदि एक अशिक्षित माँ अन्य चीजों के बारे में खुद अंजान है तो वह बच्चे को कैसे सही व पूरा ज्ञान दे पाएगी। इस तरह समाज का विकास रूक जाता है, जहाँ समाज का विकास रूकता है, देश का विकास अपने-आप रूक जाता है। अशिक्षित स्त्री अपने अधिकारों से वचिंत होती है। कोई भी उसका फ़ायदा उठा सकता है। समाज में अशिक्षित होने के कारण उसका शोषण सबसे ज्यादा होता है। यदि स्त्री शिक्षित है तो वह स्वयं को स्वाबलंबी बना लेती है, इससे वह अपने भरण पोषण के लिए किसी दूसरे पर निर्भर नहीं होती है। इस तरह व अपने ऊपर हो रहे शोषण का विरोध कर स्वयं को बचा सकती है। समाज तथा उसके स्वयं के विकास के लिए स्त्री का शिक्षित होना आवश्यक है।

- **Q12**

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
(क) 'मुनीसु' कौन है? लक्ष्मण उनसे बहस क्यों कर रहे हैं?
(ख) लक्ष्मण के हँसने का क्या कारण है?
(ग) लक्ष्मण की 'मृदुवाणी' की क्या विशेषता है?
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए - चहत उड़ावन फूँकि पहारू।
(ङ) 'कुम्हड़बतिया' का उदाहरण क्यों दिया गया है?

अथवा

कभी-कभी वह यों ही देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।
(क) साथ कौन देता है और किसका?
(ख) 'यों ही' में निहित अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
(ग) आवाज़ की हिचक को विफलता क्यों नहीं कहा जा सकता?
(घ) कविता में 'मनुष्यता' का अभिप्राय क्या है?
(ङ) संसार में इस प्रकार की 'मनुष्यता' की क्या उपयोगिता है?

-

Solution:

(क) मुनीसु शब्द परशुराम के लिए कहा गया है। लक्ष्मण उनके अनुचित क्रोध और अहंकारी स्वभाव के कारण उनसे बहस कर रहे हैं।

(ख) लक्ष्मण परशुराम के व्यवहार पर हँस रहे हैं। उन्हें लगता है कि परशुराम उन्हें बच्चे के समान फरसा दिखाकर डराने का प्रयास कर रहे हैं। उनका यह प्रयास लक्ष्मण को हँसी दिलवा देता है।

(ग) लक्ष्मण की मृदु वाणी कि विशेषता यह है कि उसमें व्यंग्य भरा पड़ा है। जो परशुराम को क्रोधित कर देता है।

(घ) फूँक से पहाड़ उड़ाने का प्रयास करना अर्थात किसी की क्षमताओं को कम आँकना।

लक्ष्मण के अनुसार परशुराम का फरसा दिखाकर डराना ऐसे ही है जैसे फूँक से पहाड़ उड़ाना। अर्थात राम तथा लक्ष्मण को फरसा दिखाकर डराना मूर्खता से भरा कार्य है। वे ऐसे फरसे को देखकर डरने वालों में से नहीं है। वे तो डटकर लड़ने वालों में से है।
(ङ) इस उदाहरण के माध्यम से लक्ष्मण ने यह बताने का प्रयास किया है कि हम इसके समान कोमल, कमज़ोर, निर्बल नहीं हैं।

अथवा

(क) संगतकार, मुख्यगायक का साथ देता है।
(ख) 'यों ही' में निहित भाव है कि संगतकार के साथ में स्वार्थ का भाव निहित नहीं है। वह तो अपना कर्तव्य समझते हुए ऐसे ही साथ दे देता है।
(ग) संगतकार की आवाज़ में हिचक इसलिए है कि कहीं वह मुख्य गायक से अच्छा न गा दे। इसलिए वह गाते हुए हिचकता है। अतः हम उसकी हिचकता को विफलता का नाम नहीं दे सकते हैं।
(घ) दूसरे की सहायता के लिए स्वयं की क्षमता और योग्यता को दबा देना मनुष्यता होता है। संगतकार वही करता है। जो मनुष्यता की सही परिभाषा दर्शाता है।
(ङ) संसार में इस प्रकार की बहुत उपयोगिता है। यदि इस प्रकार के मनुष्य न हो, तो मुख्यगायक जैसे लोगों के लिए गाना तथा अन्य कार्य करना असंभव हो जाए। इस प्रकार की मनुष्यता हर क्षेत्र में विद्यमान है और इनके कारण ही लोग सरलतापूर्वक कार्य कर पा रहे हैं।

- **Q13**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-
(क) लक्ष्मण 'कुम्हड़बतिया' और 'तरजनी' के उदाहरण से अपनी किस बात को सिद्ध करना चाहते हैं और क्यों?
(ख) संगतकार किन-किन रूपांे में मुख्य गायक की मदद करता है?
(ग) 'कन्यादान' कविता में माँ ने लड़की को अपने चेहरे पर रीझने और वस्त्र तथा आभूषणों के प्रति लगाव को मना क्यों किया है?
(घ) 'छाया मत छूना' के कवि ने यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?
(ङ) पठित काव्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताएँ लिखिए।

Solution:

(क) लक्ष्मण के अनुसार वे 'कुम्हड़बतिया' के समान नहीं है, जो तर्जनी मात्र छूने से ही मर जाते हैं। उनका मानना है कि वह और राम उम्र में किशोर अवश्य हों परन्तु वीरता और साहस में वे किसी से कम नहीं है। उनकी उम्र मात्र से उन्हें कोमल और कमज़ोर मान लेना मूर्खता होगी। अतः वह 'कुम्हड़बतिया' तथा 'तरजनी' के उदाहरण से यह सिद्ध करना चाहते हैं कि वे दोनों परशुराम के समान वीर और कुशलयोद्धा हैं।

(ख) संगतकार निम्नलिखित रूपों में गायक की मदद करता है-

(1) गायन के समय यदि गायक-गायिका का स्वर भारी हो तो संगतकार अपनी आवाज़ से उसमें मधुरता भर देता है।

(2) जब गायन करते समय मुख्य गायक-गायिका अंतरे की जटिलता के कारण तानों में खो जाता है तो वह उसके स्थाई स्वरुप को सँभालते हुए गायन करता रहता है।

(3) जब गायन करते समय मुख्य गायक-गायिका अपनी लय को लाँघकर भटक जाते हैं तो संगतकार उस भटकाव को सँभालता है।

(4) तारसप्तक के गायन के समय गायक-गायिका का स्तर धीमा होने लगता है तो वह उसकी गायन में अपने स्तर को मिलाकर उसकी गति को सुर का साथ देता है।

(ग) स्त्रियाँ अपने चेहरे के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए आभूषणों तथा वस्त्रों का सहारा लेती है। इससे वे स्वयं को सजाने में व्यस्त हो जाती हैं। उन्हें इनसे अधिक कुछ दिखाई नहीं देता है। इनके मध्य इतना उलझ जाती हैं कि वे स्वयं के अस्तित्व और विकास को भूल जाती हैं। यही कारण है इन्हें स्त्री जीवन के लिए बंधन माना गया है। यदि वे चेहरे और आभूषण का मोह को त्याग दें, तो वे सबसे आगे निकल सकती हैं। इसलिए माँ ने लड़की को अपने चेहरे पर रीझने और वस्त्र तथा आभूषणों के प्रति लगाव को मना किया है।

(घ) यथार्थ मनुष्य जीवन के संघर्षों का कड़वा सच है। हम यदि जीवन की कठिनाइयों व दु:खों का सामना न करके उनको अनदेखा करने का प्रयास करेंगे, तो आगे चलकर अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकते। बीते पलों की स्मृतियों को अपने से चिपकाके रखना और अपने वर्तमान से अंजान हो जाना मनुष्य के लिए मात्र समय की बर्बादी के अलावा और कुछ नहीं है। अपने जीवन में घट रहे कड़वे अनुभवों व मुश्किलों से दृढ़तापूर्वक लड़ना ही मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। अर्थात् जीवन की कठिनाइयों को यथार्थ भाव से स्वीकार करना चाहिए। उनसे मुँह मोड़ने के स्थान पर सकारात्मक भाव से उनका सामना करना चाहिए। इसी में स्वयं की भलाई है। इसलिए कवि ने यथार्थ के पूजन की बात कही है।

(ङ) राम के स्वभाव के दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. धीरज और विनयशील- परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने नम्रता पूर्ण वचनों का सहारा लेकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। यही कारण था कि उन्होंने स्वयं को उनका सेवक बताया व उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया।

2. मृदु और कोमल भाषी- उनकी भाषा अत्यंत कोमल व मीठी थी। परशुराम के क्रोधित होने पर भी वह अपनी कोमलता और मृदुता को नहीं छोड़ते हैं। श्री राम उनके क्रोध पर शीतल जल के समान शब्दों व आचरण का आश्रय ले रहे थे।

- **Q14**

'साना साना हाथ जोड़ि ' में कहा गया है कि 'कटाओ' पर किसी दुकान का न होना वरदान है, ऐसा क्यों ? भारत के अन्य प्राकृतिक स्थानों को वरदान बनाने में नवयुवकों की क्या

भूमिका हो सकती है स्पष्ट कीजिए।

Solution:

यदि कटाओ में अधिक दुकानें खुली तो सैलानियों का अधिक आगमन आरम्भ हो जाएगा। इस कारण से उसकी सुन्दरता पर भार पड़ जाएगा। वाहनों के अधिक आने-जाने से वायु में प्रदूषण बढ़ जाएगा। सैलानियों द्वारा जगह–जगह इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक थैली, गिलास, बोतलों आदि चीज़ों से प्राकृतिक सौंदर्य घट जाएगा। अतः वहाँ दुकान का न होना उसके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। भारत के अन्य प्राकृतिक स्थानों को वरदान बनाने में नवयुवकों को महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। वे लोगों को प्राकृतिक सौंदर्य को बनाए रखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ऐसे स्थानों की सुंदरता को बनाए रखने के लिए कार्यक्रम व दल बना सकते हैं। समय-समय पर वहाँ की सफाई के लिए अभियान आरंभ कर सकते हैं। स्वयं अपने देश के प्राकृतिक सौंदर्य को बनाने के लिए सजग हो सकते हैं।

- **Q15**

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) सिक्किम यात्रा के दौरान फौजी-छावनियाँ देखकर लेखिका के मन में उपजे विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) दुलारी और टुन्नू की मुलाकात के बाद टुन्नू के चले जाने पर दुलारी का कठोर हृदय करुणा और कोमलता से क्यों भर उठा?
(ग) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।
(घ) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' प्रश्न के उत्तर में अज्ञेय ने क्या कहा है ? संक्षेप में लिखिए।

Solution:

(क) सैनिक छावनियाँ देखकर लेखिका को बहुत दुख हुआ। उसे इस बात का अहसास हुआ की इस सौंदर्य स्थानों में भी कई लोग ऐसे हैं, जो सीमा की रक्षा के लिए परिवार और अपनों से दूर है। वे लोग इतनी ठंड में इसलिए खड़े हैं ताकि हम सुरक्षित रह सकें। यह देखकर लेखिका थोड़ी दुखी हो गई। एक सैनिक से बात करने के बाद तो उसे इस बात का और भी भान हुआ कि ये सैनिक भी अपनों का साथ चाहते हैं। आखिर हम क्यों सीमा के चक्कर में पड़कर लड़ते-झगड़ते रहते हैं। काश की यह सब नहीं होता। हम महानगर में रहकर भूल जाते हैं कि कोई हमारे लिए अपनों को छोड़कर दुर्गम स्थानों पर बैठा है।

(ख) दुलारी एक अकेली स्त्री थी। स्वयं की रक्षा हेतु वह कठोर आचरण करती थी। परन्तु अंदर से वह बहुत नरम दिल की स्त्री थी। टुन्नू, जो उसे प्रेम करता था, उसके लिए उसके हृदय में बहुत खास स्थान था। इसके बाद भी वह हमेशा टुन्नू को भगा देती थी क्योंकि टुन्नू उससे उम्र में बहुत छोटा था। समाज द्वारा उनके प्रेम को स्वीकृति मिलना असंभव था। वह इस सत्य से अच्छी तरह से वाकिफ़ थी। हृदय से वह उसका प्रणय निवेदन स्वीकार

करती थी। परन्तु समाज के डर से उससे दूरी बनाए रखती थी। टुन्नू के चले जाने के बाद उसे अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था। टुन्नू के आँसू धोती पर साफ़ रूप से देखे जा सकते थे। उसे दुखी करने के कारण उसका हृदय करुणा और कोमलता से भर उठा।

(ग) इस कथन का शाब्दिक अर्थ है कि इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग खो गई है, मैं किससे पुछूँ? परन्तु यदि दुलारी की मनोस्थिति देखें तो जिस स्थान पर उसे गाने के लिए आमंत्रित किया गया था, उसी स्थान पर टुन्नू की मृत्यु हुई थी तो उसका प्रतीकार्थ होगा- इसी स्थान पर मेरा प्रियतम मुझसे बिछड़ गया है। अब मैं किससे उसके बारे में पुछूँ कि मेरा प्रियतम मुझे कहाँ मिलेगा? अर्थात् अब उसका प्रियतम उससे बिछड़ गया है, उसे पाना अब उसके बस में नहीं है।

(घ) लेखक के अनुसार वह अपनी आंतरिक विवशता के कारण लिखने के लिए प्रेरित होता है। आतंरिक विवश्ता उसे जीने नहीं देती है। वह जब तक लिखता नहीं है, तब तक बैचेन रहता है। उससे मुक्ति पाने के लिए उसे लिखना पड़ता है। उसकी अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है। इससे वह किसी घटना के सही और गलत पक्ष को समझता है। उसे तटस्थ होकर देखता है ताकि उस विषय पर विस्तारपूर्वक लिख सके। इस तरह से वह अपनी आतंरिक विवशता को शांत कर पाता है।

- **Q16**

निम्निलिखित में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए :

(क) पेड़ों का महत्व
• प्रकृति की संतान
• पर्यावरण
• हमारा कर्त्तव्य

(ख) महानगरों में आवास की समस्या
• महानगर
• समस्या क्यों
• समाधान

(ग) मदिरापान: एक घातक व्यसन
• अनेक व्यसनों का जन्मदाता
• मदिरापान की हानियाँ
• समाधान के उपाय

Solution:

(क) पेड़ों का महत्त्व

पेड़ प्रकृति का दिया उपहार है। ये प्रकृति की ऐसी संताने हैं, जो हमारे जीवन का पालन-पोषण कर रहे हैं। इन्होंने सदैव ही हमें दिया है। पेड़ पर्यावरण में विद्यमान विषाक्त गैस कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन देते हैं। इससे पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को बढ़ने से रोकने में सहायता मिलती है। आज पेड़ों की संख्या में भारी गिरावट आई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि पर्यावरण में प्रदूषण की निरंतर वृद्धि हो रही है। हमें चाहिए कि पेड़ों के कटाव को सख्ती से रोकें। इसके लिए आवश्यक कानून बनाएँ। लोगों में इस विषय पर जागृति लाएँ और अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ।

(ख) महानगरों में आवास की समस्या

महानगर अति सुविधासंपन्न होते हैं। यहाँ की जीवन शैली उच्च होती है। इस कारण यहाँ विभिन्न प्रकार की समस्याएँ रहती हैं। यहाँ पर आवास मिलना एक सबसे बड़ी समस्या है। पूरे भारत से लोग रोज़-रोटी की तलाश में महानगरों में रहने आते हैं। महानगरों पर लोगों की आबादी का दबाव पड़ता है और यहाँ आवास की समस्या आने लगती है। हमें चाहिए कि महानगरों के स्थान पर गाँव तथा छोटे शहरों को सक्षम बनाएँ, जिससे वहाँ पर लोगों को जीविका के पर्याप्त साधन मिल सकें। फ्लैट कल्चर इससे निपटने में कारगर है। इस तरह से सभी लोगों को घर की सुविधा उपलब्ध करवायी जा सकेगी।

(ग) मदिरापानः एक घातक व्यसन

मदिरापान अनेक व्यसनों का जन्मदाता है। इसके बाद मनुष्य अनेक प्रकार के व्यसनों जैसे कर्ज़, जुआ, सिगरेट आदि से जकड़ जाता है। इससे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है। मदिरापान करने वाले व्यक्ति के परिवार तक की भूखे मरने की नौबत आ जाती है। मदिरापान करने वाले व्यक्ति को समाज द्वारा नकारा जाता है। कारण मदिरापान करके लोग आपा खो बैठते हैं और वे दूसरों के साथ अभद्र व्यवहार तक कर बैठते हैं। लोग मदिरापान करने वालों को अपना मानने से हिचकिचाते हैं। हमें शीघ्र ही इस बुराई को जड़ से उखाड़ना पड़ेगा। सख्त कानून बनाने पड़ेगें। सरकार को मदिरापान की बिक्री पर रोक लगानी चाहिए तभी इसे जड़ से उखाड़ा जा सकता है।

- **Q17**

'सामाजिक सेवा कार्यक्रम 'के अन्तर्गत किसी ग्राम में सफाई अभियान के अनुभवों का उल्लेख करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

अथवा

समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने के उपरान्त भी 'आधार पहचान पत्र 'न मिलने कि शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के संबंद्ध अधिकारी को पत्र लिखिए।

-

Solution:

पता .....
दिनांक: .....

प्रिय मित्र,
बहुत प्यार!

तुम्हारा हालचाल काफ़ी समय से नहीं मिला और मुलाकात भी नहीं हुई। अत: तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार सहित कुशलतापूर्वक होगे। मैं अपने विद्यालय की तरफ से कुछ दिनों के लिए रामपुर सफाई अभियान के लिए गया था। वहाँ के कुछ अनुभव तुम्हारे साथ बाँट रहा हूँ। रामपुर एक ऐसा गाँव है जहाँ सर्वत्र गंदगी फैली हुई थी। गंदगी के कारण वहाँ हैजा, मलेरिया आदि फैल रहा था। वहाँ जाकर हमने सबसे पहले गंदगी के कारणों का पता लगाना शुरु किया। फिर इस पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया।
हमने पाँच-पाँच छात्रों की टीम बनाई तथा अपने कार्य का विभाजन किया। हम सभी ने मिलकर वहाँ सफाई करना आरंभ किया। हमने वहाँ के प्रत्येक स्थान की सफाई की तथा ग्रामीणों को सफाई के प्रति जागरुक किया। इससे यह फायदा हुआ कि वहाँ का बहुत बड़ा हिस्सा साफ़ हो गया। सभी ग्रामीणों ने इसके लिए हमारा धन्यवाद किया। यह अनुभव मेरे जीवन का सबसे अपूर्व अनुभव था।
अब पत्र समाप्त करता हूँ। अपने पापा-मम्मी को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हारे पत्र का इंतज़ार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,
राघव

अथवा

पता: .....
दिनांक: .....

सेवा में,
प्रबंधक अधिकारी,
आधार पहचान पत्र कार्यालय,
नई दिल्ली।

विषय: आधार पहचान पत्र नहीं मिलने की शिकायत करने हेतु पत्र।

महोदय,
निवेदन यह कि मैं आपका ध्यान अपने आधार पहचान पत्र नहीं मिलने की समस्या की ओर करवाना चाहता हूँ। पिछले सात माह से मेरा आधार कार्ड नहीं आया है। घर के अन्य सदस्यों का आधार कार्ड सात माह पूर्व ही आ चुका है। परन्तु मेरा आधार कार्ड सारी औपचारिकताएँ पूर्ण करने के बाद भी नहीं भेजा गया है। इस विषय पर मैं कितनी बार

आपके कार्यालय के चक्कर लगा चुका हूँ। हर बार मुझे झूठा आश्वासन देकर भेज दिया जाता है। परन्तु अब तक मुझे आधार कार्ड नहीं भेजा गया है। आधार कार्ड मेरे लिए बहुत आवश्यक है। आज हर स्थान पर आधार कार्ड की ही आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में मेरे पास इसका ना होना समस्या खड़ी कर देता है। आखिरकार हारकर मैं आपको पत्र लिख रहा हूँ। आपसे निवेदन है कि इस विषय में कुछ ठोस कदम उठाएँ तथा मुझे शीघ्र ही मेरा आधार कार्ड भेजने की कृपा करें। आपके इस सहयोग के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित,

भवदीय,

निलेश मुखर्जी